ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 15
वैशाख कृष्णा एकादशी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
5 मई से 21 मई 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री सत्यव्रत सामवेदी
श्री बलदेव राज आर्य
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्रीमती सरोज वर्मा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018
मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारूकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

क्यों नहीं उठा पा रहे है पाखण्ड के खिलाफ कदम?

सम्पादकीय

राजा वसुसेना की श्रद्धा राज ज्योतिषियों ने फलित ज्योतिष पर बहुत अधिक जमा दी थी। वो बिना मुहूर्त जाने कोई काम नहीं करते थे। शत्रुओं को वसुसेना की यह कमजोरी का पता चला। शत्रु ऐसी घात लगाने लगे कि किसी ऐसे मुहूर्त में हमला करें, जिसमें प्रतिकार का मुहूर्त न बने और वसुसेना को सहज परास्त किया जा सके। प्रजाजनों व सभासदों को राजा के इस कुचक्र में फंस जाने पर बड़ी चिन्ता होने लगी। संयोगवश राजा एक बार देशके दौरे पर निकले राजा के साथ राज ज्योतिषी भी थे। रास्ते में एक किसान मिला, जो हल बैल लेकर खेत जोतने जा रहा था। राजा ज्योतिषी ने उसे रोककर कहा, मूर्ख जानता नहीं आज जिस दिशा में दिशाशूल है, उसी में चला जा रहा है। ऐसा करने से भंयकर हानि उठानी पड़ेगी। किसान दिशाशूल के बारे में कुछ नहीं जानता था, उसने नम्रता पूर्वक कहां, मैं तो प्रत्येक दिन इसी दिशा में जाता हूँ। उसमें दिशाशूल वाले दिन भी होते होंगे। यदि आपकी बात सच है तो मेरा तो अब तक सर्वनाश हो गया होता। ज्योतिषी सिटपिता गये भेद मिटाने के लिए बोले, लगता है तेरी कोई हस्तरेखा बहुत प्रबल है। दिखा तो अपना हाथ। किसान ने हाथ तो बढ़ा दिया लेकिन हथेली नीचे की ओर रखी। ज्योतिषी इस पर और अधिक चिढ़े और बोले इतना भी नहीं जानता कि हस्तरेखा दिखाने के लिए हथेली ऊपर की ओर रक्खी जाती है। किसान मुस्कराया और बोला, हथेली वह फैलाए, जिसे किसी से कुछ माँगना हो, जिन हाथों की कमाई से मैं अपना गुजारा करता हूँ उन्हें क्यों किसी के आगे फैलाऊँ मुहूर्त तो वह देखे जो कर्महीन और निठल्ला हो, यहां तो 365 दिन पवित्र है। मैं कर्म में विश्वास करता हूँ भाग्य/भविष्य फल में नहीं। मुझे यह दृढ़ विश्वास है कि जैसा मैंने कर्म किया है वैसा ही मुझे फल प्राप्त होगा।

21वीं शताब्दि में आज भी करोडों-करोडों राशि फल, फलित ज्योतिष, गृह-नक्षत्र, जादू-टोना, शुभ-अशुभ के चक्कर में फंसे हुए है। आज टीवी द्वारा प्रतिदिन ज्योतिषियों ढोंगी-साधुओं, यंत्र-तंत्र एवं नगों के बेचने वाले, चमत्कार करने वालों का पूरा प्रचार धड़ल्ले से हो रहा है प्रतिदिन समाचार पत्रों द्वारा राशि-फल एवं गृहों की दशाओं का भय पैदा किया जाता है और आम व्यक्ति सदा शंकित एवं भयभीत रहता है। आज विज्ञान के युग में भी इस प्रकार का ढोंग व पाखण्ड बढ़ता जा रहा है।

इनके खिलाफ सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है और ना ही किसी सामाजिक व धार्मिक संगठन द्वारा मिलकर इस पाखंड को रोकने का प्रयास किया जा रहा है। महर्षि स्वामी दयानंद जी ने इस प्रकार के ढोंग पाखंड का खुलकर विरोध किया तो लोगों में कुछ जागृति आई लेकिन आज हमारी शिथिलता व आलस्य के कारण यह बुराई अधिक और अधिक फैलती जा रही है। हमें सरकार से ऐसे पाखण्डों को रोकने की मांग करनी चाहिए।

है जीव मरने मारनेवाला यही जो मानते। यह मारता मरता नहीं दोनों न वे जन जानते।।

वेद और राष्ट्रीय एकता

गतांक से आगे

डॉ. भवानीलाल भारतीय

पर्यावरण की सुरक्षा :- राष्ट्र की समृद्धि और उसकी श्रीवृद्धि में पर्यावरण की सुरक्षा तथा विभिन्न ऋतुओं के नियमित आगमन प्रत्यागमन का भी योगदान रहता है। सौभाग्य से भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा बसन्त छहों, ऋतुएँ अपने सम्पूर्ण बैभव को लेकर प्रकट होती हैं। इस ऋतुचक्र की अपनी विशेषता है विभिन्न ऋतुओं में प्रकृति के पल-पल परिवर्तित सौन्दर्य की मनोमुग्धकारी छटा को देखकर मनुष्य का आनन्दित होना स्वाभाविक ही है। राष्ट्र के प्रति हमारी आत्मीयता और आशक्ति भी प्रकृति के माध्यम से ही स्थापित होती है। जो लोग महानगरीय जीवन के चाकचिक्य और वहाँ प्रदूषित वातावरण में ही साँस लेने के आदी हो गये हैं, जिन्होंने विभिन्न ऋतुओं में वातावरण बदलते रूपों को निकट से नहीं देखा तथा उसका आनन्द नहीं लिया, वे भला राष्ट्रलक्ष्मी के साथ निजता का सम्बन्ध कैसे स्थापित कर सकते हैं?

वेदों में इडा, सरस्वती और मही के रूप में मातृभूमि, मातृभाषा और मातृसंस्कृति को तीन कल्याणकारी देवियों के रूप में स्मरण किया गया है-

इडा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।

हमें स्मरण रखना होगा कि राष्ट्र का पुरातन हमारे साहित्य के रूप में ही सुरक्षित है। इस शानदार विरासत को भुलाकर राष्ट्र की एकता की बात करना छलावा ही है। यों तो भारत जैसे इस विशाल देश में भाषा, भाव, रहन-सहन, खान-पान मनोरंजन के साधनों, कलाओं तथा मनुष्यों के जीवनयापन के स्तर में सर्वत्र विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है, किन्तु साहित्य और संस्कृति के कुछ ऐसे सूत्र हैं जिनसे इस देश के लोग भावात्मक एकता का सदा अनुभव करते रहे हैं।

हमारी राष्ट्रीय संस्कृति को यज्ञ की संस्कृति कहा गया है। यज्ञ की यह धारणा सामुदायिक योग क्षेम की भावना से प्रेरित होकर लोकोपकार के लिए किये जाने वाले निष्काम कर्म का ही दूसरा नाम है। लोकमंगल और जनहित के लिए किये जाने वाले सभी कार्य 'यज्ञ' के अन्तर्गत आ जाते हैं। इसी यज्ञमयी संस्कृति और उसके प्रस्तोता वेदविद् ब्राह्मणों का उल्लेख हमें इस मंत्र में मिलता है-

यस्यां सदोहविर्धाने यूपो यस्यां निमीयते।
ब्रह्माणो यस्यामर्चन्त्यृग्भिः साम्ना यजुर्विदः।
युज्यन्ते यस्यामृत्विजः सोममिद्राय पातवे।।

''इसी मातृभूमि में हमारे निवास के विविध भवन तथा अन्न रखने के कोठे हैं। हमने जिन विविध यज्ञों का समारम्भ किया, उन्हें निर्दिष्ट करने के लिए नाना यूपों के रूप में यज्ञ-स्तम्भों को भी हमने यहीं पर खड़ा किया है। इसी भूमि के निवासी वेदविद् ब्राह्मणों ने यहाँ पर रहकर ऋग्वेद की कथाओं और सामवेद के मंत्रों द्वारा परमात्मा का स्तवन किया है। अथर्ववेद के ज्ञाता ऋत्विजों ने नाना यज्ञ कर्मो का विस्तार भी इसी धरती पर किया है और उनके द्वारा आहूत इन्द्र ने यहीं पर आकर सोमपान किया है।''

इस यज्ञ रूपी संस्कृति को पुनः-पुनः स्मरण करके ही हम अपने राष्ट्र के अतीत का साक्षात्कार करते हैं और उसे पुनः प्रतिष्ठित करने की बात सोच सकते हैं।

विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोग भी एक राष्ट्र के नागरिक होते हैं। इन बहुभाषी नागरिकों के नृत्य ओर गीत इस धरती को आमोद-प्रमोद युक्त बनाते हैं। राष्ट्र रक्षा में सन्नद्ध योद्धाओं का कोलाहल और उनकी दुन्दुभियों का नाद कायर व्यक्तियों में भी उत्साह का संचार करता है। देश के रक्षक ये वीर मातृभूमि के शत्रुओं को मार भगाते हैं और इस प्रकार उसे शत्रुरहित कर देते हैं। इसी भाव को निम्न मंत्र में दर्शाया गया है-

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति, भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः।
सा नो भूमिः प्रणुदतां, सपत्नानसपत्नं मां पृथिवी कृणोतु।।-१२/१/४१

यह मंत्र इस अभिप्राय को दर्शाता है कि राष्ट्र के नागरिक निर्भीक और निर्द्वन्द्व होकर नृत्य-गीत आदि ललित कलाओं का आनन्द लेते रहें। किन्तु प्रजाजनों का आमोद-प्रमोद और हास-विलास तभी सम्भव होता है जब राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिक सजग होकर युद्धघोष करते हुए स्वकर्तव्य पर आरूढ़ रहते हैं तथा वीरों का दुन्दुभिनाद शत्रुओं के हृदय को भयकम्पित करता रहता है।

पर्जन्य पत्नी पृथिवी :- राष्ट्र की एकता और सुरक्षा उसकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर होती है। यदि देश में लगातार अकाल पड़ता रहे, अतिवृष्टि या अनावृष्टि से कृषि का सतत विनाश हो जाये तथा लोगों को भूख से काल-कवलित होना पड़े, तो देश आभ्यन्तरिक और बाह्य विपत्तियों का शिकार हो जाता है। उस स्थिति में शत्रु देश के गुप्तचरों और दुरभिसंधि करने वाले दूतों की बन आती है। अतः वेद में पृथ्वी की कल्पना 'पर्जन्य पत्नी' (मेघ से पालन की जाने वाली) बादलों से स्निग्ध होने वाली तथा व्रीहि और यवादि अन्नों को उत्पन्न करने वाली धरित्री के रूप में की गई है।

राष्ट्र रक्षा में निरत नागरिकों को यह ध्यान देना चाहिए कि यदि उन्हें ऐश्वर्य और विभूति की चाह है तो उसे देने वाली भी यह धरती माता ही है। इसी की पर्वतीय उपत्यकाओं में नाना प्रकार की निधियाँ भरी पड़ी हैं। नाना मूल्यवान मणि, रत्न, स्वर्ण और अन्य वस्तुओं को प्रदान करने वाली भी यह राष्ट्रलक्ष्मी ही है-

निधि बिभ्रती बहुधा गुहा वसु, मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे।।१२/१/४४

मनुष्य अपने स्वभाव से ही विविधता का प्रेमी होता है। उसकी मानसिक अनुभूतियों, उसकी वाणी और उसके कर्मो में भी हमें भिन्नता दिखाई पड़ती है। राष्ट्रीय एकता कोई ऐसी शक्तिशाली दण्डविधि नहीं है जिसका प्रयोग कर सभी लोगों को एक ही प्रकार की जीवन पद्धति जीने के लिए विवश किया जाय। जैसा कि पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, हमारा देश विभिन्न फूलों से बना एक सुन्दर गुलदस्ता है जिसमें गुँथे सभी पुष्प अपने नाना रंगों और गंधों के सौन्दर्य को विकीर्ण कर

जैसे पुराने त्याग कर नर वस्त्र नव बदलें सभी। यों जीर्ण तन को त्याग नूतन देह धरता जीव भी।।

वसुधा को आमोदित करते हैं। यह राष्ट्र उन सभी लोगों को धारण करता है जिनकी भाषाएँ और विचाराभिव्यक्ति के तरीके भिन्न-भिन्न हैं। जो विभिन्न व्यापार व्यवसायों को स्वीकार कर स्वजीवन-निर्वाह में संलग्न हैं। अपने-अपने गुण,कर्म,स्वभाव, योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने पारिवारिक और सामाजिक जीवन में विभिन्न भूमिकाएँ स्वीकार की हैं। 'जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं' अनेक प्रकार की वाणियों को बोलने वाले और 'नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्' अनेक प्रकार के कर्तव्यों में रत मनुष्यों को धारण करने वाली यह धरती अपने नागरिकों को वैसा ही सुख देती है जैसा एक ही घर में रहकर विभिन्न कर्म करने वाले व्यक्तियों को प्राप्त होता है। विविधता में एकता का यह दिव्य सूत्र वेद के इस मंत्र ने ही हमें दिया है।

राजमार्ग सुरक्षित रहें:- एकता को छिन्न-भिन्न करने वाले राष्ट्रद्वेषी लोग हमारे भीतरी और बाहरी छिद्रों की तलाश में रहते हैं। यदि वे अपनी चालाकी और चालबाजी से देशवासियों में फूट और विरोध के बीज बोने में सफल हो जाते हैं तो राष्ट्रीय एकता का विनाश अवश्यम्भावी है। इसी प्रकार देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए आवागमन के राजमार्गों को निष्कण्टक बनाना चाहिए। सीमा तक पहुँचने वाले मार्ग ऐसे होने चाहिएँ जहाँ सेना की गाड़ियाँ बिना किसी बाधा के शीघ्र पहुँच सकें। यों तो सभी मार्ग सार्वजनिक होते हैं जिन पर चलने का अधिकार अच्छे और बुरे सभी लोगों को प्राप्त होता है-

'यैः संचरन्त्युभये भद्रपापा' किन्तु इन मार्गों को शत्रुओं की पहुँच से परे तथा तस्करों के चौर्य कर्म से रहित बनाने का दायित्व राष्ट्र के सभी नागरिकों के साथ-साथ प्रशासन का भी है।

राष्ट्र के नागरिकों को सभी प्रकार के भयों से मुक्त कराने से भी राष्ट्र की एकता को बल मिलता है। सिंह और व्याघ्र आदि आरण्य पशु जिन्हें इस सूक्त में 'पुरुषाद' कहा है, उनमें तथा भेड़िये के तुल्य दुष्ट स्वभाव तथा दुष्ट चाल वाले मनुष्यों से जन-जीवन को सुरक्षित किया जाना चाहिए। पृथ्वी सूक्त के 49 में मंत्र में इस भावना को अभिव्यक्त किया गया है।

राष्ट्रीय एकता का सर्वोपरि साधन तो उसके निवासियों की सुदृढ़ संकल्पशक्ति ही है। जहाँ निर्बल मानसिकता वाले लोगों का बाहुल्य हो जाता है वहाँ राष्ट्र के सम्मुख अनेक विपत्तियाँ आना स्वाभाविक ही है। संकल्पशक्ति को जगाने के लिए मन में स्फूर्ति युक्त भावों का लाना आवश्यक होता है। इसी अभिप्राय से निम्न में राष्ट्र का स्वाभिमानी नागरिक कह उठता है-

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्। १२/१/५४

अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए विरोधी शक्ति का पराभव करने वाला मैं स्वयं हूँ। मैं प्रशंसनीय कीर्ति वाला हूँ और प्रत्येक दिशा से आने वाली विपत्ति को निःशेष करने की क्षमता मुझे प्राप्त है। इस प्रकार राष्ट्र की एकता तथा धरती माता के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा व्यक्त करने वाला अथर्ववेद का यह भूमिसूक्त वैदिक साहित्य की एक बहुमूल्य निधि है।

वैदिक स्वाध्याय से साभार

आर्य समाज तिलक नगर कोटा द्वारा आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज तिलक नगर की ओर से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर आर्य समाज का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ पं. वृद्धिचन्द शास्त्री के पौरोहित्य में अग्निहोत्रपूर्वक देवयज्ञ से हुआ। इस अवसर पर भारतीय नवसवंत्सर 2070 प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ के पश्चात् सत्संग का आयोजन भी किया गया।

हाड़ौती के विद्वान पं. वृद्धिचन्द शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में सुसंस्कारित संतानों के निर्माण पर बल दिया है। उन्होंने माता को पहला तथा पिता को दूसरा व आचार्य को तीसरा देव कहा।

आर्य समाज तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में ब्यावर (अजमेर) से पधारे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. अमरसिंह ने अपने सुमधुर भजनों एवं उपदेश से आर्यजनों को जातपांत एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों को भारतीय समाज से दूर करने के लिए आव्हान किया तथा मनुष्य मात्र से प्रेम करने का संदेश किया।

समारोह में वैदिक विद्वान अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदों एवं वैदिक संस्कृति की रक्षा तथा भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान को जाग्रत करने के लिए इसी दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नए वर्ष के प्रारम्भ के उपलक्ष्य में 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।

जिला आर्य सभाके प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि आर्य समाज कोटा जिला सभा महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ा रही है। आर्य समाज के द्वारा नशामुक्ति, स्त्री शिक्षा व चेतना तथा मनुष्य मात्र की सेवा के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर आर्य समाज तिलक नगर द्वारा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा को उनके द्वारा समर्पित भाव से की जा रही समाज सेवा तथा ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने के लिए किए जा रहे परोपकारी कार्यो के लिए शॉल ओढ़ाकर माल्यार्पण कर तथा श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। आर्य समाज तिलक नगर के कार्यो को समर्पित एवं सेवा भाव से करने के लिए नरेश विजयवर्गीय को माल्यार्पण कर शॉल ओढ़ाकर तथा श्रीफल प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज तिलक नगर के वरिष्ठ सदस्य गणपत लाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज के प्रधान ओमप्रकाश तापडिया द्वारा आगन्तुक विद्वानों एवं महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

-मंत्री नरेन्द्र विजय वर्गीय

छिदने न जलने और गलने सूखनेवाला कभी। यह नित्य निश्चल, थिर, सनातन और है सर्वत्र भी।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, जयपुर का प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिवर

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बच्चों व युवाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण एवं संस्कार शिक्षा के लिए विशाल आवासीय प्रान्तीय "योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर" का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विस्तृत कार्यकम इस प्रकार है –

दिनांक : 26 मई से 2 जून, 2013

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रीगंगानगर

सम्पर्क – श्री राजूराम आर्य – 9672997965

अन्य आवासीय ग्रीष्मकालीन शिविर

1. 16– 22 मई, 2013, आर्य समाज, केकड़ी, अजमेर, सम्पर्क–श्री अशोक आर्य – 9214042770।
2. 17–23 मई, 2013, जोणायचा–खुर्द, अलवर, सम्पर्क – स्वामी रामदेव –9413586721
3. 28 मई से 4 जून, 2013, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड़, अजमेर, सम्पर्क– श्री यतीन्द्र शास्त्री –9414436031

इन उपर्युक्त शिविरों में प्रातःकालीन 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक की गुरूकुलीय दिनचर्या का कठोरतापूर्वक पालन करवाया जाता है। इस व्यस्ततम दिनचर्या का पालन करवाते हुए बच्चों व युवाओं को यज्ञ, योग, अनेक प्रकार के व्यायाम, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद, समय–प्रबन्धन, व्यवहारकुशलता, लाठी, जूड़ो–कराटे, मार्शल आर्ट, अस्त्र–शस्त्र आदि का सुयोग्य, अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा गहन प्रशिक्षण दिया जाता है।

अतएव सभी महानुभावों से निवेदन है कि अपने बच्चों व युवाओं को इन शिविरों में अधिक से अधिक संख्या में भेंजे, जिससे उनके भविष्य का निर्माण किया जा सके।

इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क करें –

1. आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, कार्यकारी संचालक – 9352547258
2. श्री भवदेव शास्त्री, प्रान्तीय मंत्री – 9799498458

–अनिल आर्य, जयपुर

स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल अलवर 51वाँ निःशुल्क एलोपैथिक, होम्योपैथिक चिकित्सा एवं जॉच शिविर

दिनांक 5 मई 2013, रविवार

चिकित्सक

डॉ. देशबन्धु गुप्ता, डॉ. बी.एल. सैनी डॉ. डी.सी. शर्मा, डॉ. अंजु गुप्ता, डॉ. गोपाल गुप्ता

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में, जन सहयोग से एवं स्व. श्रीमती निर्मला भार्गव धर्मपत्नी श्री जगदीश प्रसाद भार्गव की स्मृति में 51वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर 5 मई 2013 को आयोजित किया गया है। आप सादर आमंत्रित हैं। यज्ञ प्रातः 7.30 बजे प्रारम्भ होगा।

श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर

आर्य समाज स्वामी दयानंद मार्ग, श्रीगंगानगर द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

महर्षि दयानंद सरस्वती पार्क, पुरानी आबादी में, आर्य समाज श्रीगंगानगर द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नवसम्वत्सर विक्रम संवत् चैत्र सुदी एकम् को नव वर्ष पर यज्ञ का आयोजन किया गया यह पर्व बड़े हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। आर्य समाज के वृहत संख्या में उपस्थित सभी आर्य सदस्यों व आर्य स्त्री समाज की महिलाओं ने मंत्रों से आहुति प्रदान की। वेद पाठ पंडित हर्षवर्धन शास्त्री तथा नागेन्द्र शास्त्री, पुराहित आर्य समाज द्वारा किया गया।

हवन के पश्चात पार्क में सत्संग तथा प्रवचन भी हुए। ईश्वर भक्ति भजन पुरोहित पंडित नागेन्द्र शास्त्री ने प्रस्तुत किया व महिलाओं ने सहयोग किया। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त संस्कृत विद्वान डॉ. सत्यव्रत वर्मा का परिचय श्री रवि भटनागर, अध्यक्ष बोद्धिक प्रकोष्ठ ने दिया व डॉ. दिनानाथ मेहता ने माल्यार्पण से स्वागत किया। वैदिक विद्वान डॉ. भवानी लाल भारतीय का स्वागत डॉ. नेतराम भारी पूर्व वैज्ञानिक कृषि अनुसंधान केन्द्र ने किया।

आज के दिवस पर व्यत्व्य देते हुए डॉ. वर्मा ने कहा कि वैदिक सभ्यता ईसा पूर्व ही थी, हडप्पा मोहनजोदडो की सभ्यताओं में भी यज्ञ अवशेष व पात्र प्राप्त हुए हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक भी आज के दिन हुआ था। डॉ. भारतीय ने आज के दिवस पर राष्ट्र संवत् का शुभारम्भ हुआ व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नवीन कार्य प्रारम्भ करने व अनागत का विवेचन करने से, करने का आह्वान किया। सभी यजमानों पर पुष्प वर्षा व सुखी जीवन यापन की मंगल कामना की गयी। स्वामी दयानंद के आर्य समाज की स्थापना का ही प्रभाव है कि सभी वर्गो में यज्ञ, महिला शिक्षा, ऊँच-नीच के भेद भाव को हटा यज्ञ की वैज्ञानिक विधा से सभी को हवन करने के अधिकार प्रदान हुआ। लोगों को धर्म व पाखंड को सही अर्थो में बतलाकर आर्य समाज ने एक नयी दिशा प्रदान की। आर्य समाज श्रीगंगानगर के प्रधान भूपंन्द्र खन्ना ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया।

- गोर मोहन, मंत्री

आर्य समाज सोजत सिटी, जिला-पाली द्वारा विक्रम सम्वत् की वैज्ञानिकता पर प्रकाश

आर्य समाज के तत्वावधान में स्थानीय मोदी मोहल्ले में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। स्वतंत्रता सेनानी कवि पत्रकार स्व. यशवंत 'रूचिर' की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती भटनागर के सान्निध्य में आयोजित यज्ञ में पौरोहित्य पद से उपदेश देती हुई आर्य समाज की राष्ट्रीय नेत्री श्रीमती लीलावती आर्या ने कहा कि यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है। उन्होंने विक्रमी संवत्सर की वैज्ञानिकता पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर स्वामी श्री वासुदेव गुरुकुल, खोखरा के मुख्य आचार्य चतराराम आर्य ने बालिकाओं को आर्य संस्कारित शिक्षा दिलवाने हेतु सोजत में कन्या गुरुकुल खोलने की जरूरत को इंगित किया। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान दलवीर राय, मंत्री हीरालाल आर्य सहित बच्चन बाबू, हरिकृष्ण टॉक, रवीन्द्र भटनागर ने यजमान के रूप में आहुतियाँ दी वहीं मुख्य यजमान के रूप में नवनीत राय

इन्द्रिय पहुँच से है परे, मन–चिन्तना से दूर है। अविकार इसको जान दुख में व्यर्थ रहना चूर है।।

'रुचिर' ने परिवार सहित अपनी भागीदारी निभाई।

समारोह में खोखरा गुरूकुल के 35 ब्रह्मचारियों ने संवेत् स्वरों में वेदमंत्रों का पाठ कर सभी को भाव विभोर किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ अध्यापक नत्थाराम प्रजापत, रणजीत राय, प्रेमनारायण आर्य, उदयराम माली, श्रीमती अयोध्या-राजेश अग्रवाल, श्रीमती राजबाला गुप्ता, श्रीमती इन्दु भटनागर, श्रीमती टीना अग्रवाल, राजू झंवर, श्रीमती उर्मिला गुप्ता सहित नगर के गणमान्यजनों ने यज्ञ अनुष्ठान का धर्मलाभ प्राप्त किया। अंत में कार्यक्रम संयोजिका योगशिक्षिका श्रीमती वीणा भटनागर ने आगन्तुक अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम से पूर्व आर्य समाज के मंत्री हीरालाल आर्य के नेतृत्व में प्रभात फेरी का आयोजन रखा गया। नवसंवत्सर पर मोती चन्द सेठिया आदर्श विद्या मंदिर व खोखरा गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने भजन गाते व नारे लगाते हुए प्रभात फैरी निकाली जो नगर के मुख्य मार्गो से गुजरते हुए मोदियों के बास में पूरी हुई जिसमें प्रधानाध्यापक मनोहरलाल सोलंकी, सुरेश मेवाड़ा, कैलाश चांवला आदि ने भाग लिया।

नवनीत राय 'रुचिर', कोषाध्यक्ष

गुरुकुल हरिपुर में नूतन वर्ष पालन

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर गुरुकुल हरिपुर जुनवानी, जिला नुआपड़ा (ओड़िशा) में 11 अप्रैल को उल्लासमय वातावरण में नूतन वर्ष का पालन किया। सर्वप्रथम आचार्य दिलील कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में ब्रह्मयज्ञ पूर्वक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के विभिन्न ग्रामों से पधारे हुए शताधिक धर्मानुरागी सज्जनों ने नई प्रेरणा, नये उत्साह की प्राप्ति के लिये यज्ञ भगवान् में आहुति प्रदानकर नववर्ष का आहवान किया।

यज्ञोपरान्त गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव जी आचार्य का नूतनवर्ष एवं विभिन्न सैद्धान्तिक विषयों पर सारगर्भित उपदेश हुआ। पश्चात् शांतिपाठ पूर्वक कार्यक्रम को विराम दिया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के उपप्रधान श्री सोमनाथ जी पात्र (ओड़िशा), श्रीमती विनोदिनी पण्डा जी (बी.डी.ओ.) जयपाटना सपिरवार तथा नुआपड़ा शहर के अनेक गणमान्य महानुभाव एवं पत्रकार बंधु कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। यह सारा कार्यक्रम गुरुकुल के आचार्य एवं सहयोगियों के कुशल प्रबंधन में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। - दिलीप कुमार जिज्ञासु

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा द्वारा ऋषि बोध उत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 4 मार्च से 11 मार्च, 2013 तक ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर 7 दिनों तक चलता रहा। भारत के लगभग सभी प्रांतों से पधारे ऋषिभक्त इसमें सम्मिलित हुए। यज्ञ में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सतपाल जी पथिक के मधुर भजन यज्ञवेदी पर ही होते थे।

मुख्य कार्यक्रम 9 एवं 10 मार्च को था प्रात: 6 बजे से प्रभातफेरी जो कि टंकारा ग्राम एवं टंकारा परिसर में होती हुई गुजरी प्रात: प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.45 बजे तक प्राकृतिक योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेद चिकित्सा का कार्यक्रम निरन्तर तीन दिन तक चलता रहा। उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम जिसकी अध्यक्षता श्री एस.के. शर्मा, मंत्री प्रादेशिक सभा एवं निदेशक डी.ए.वी. कॉलेज पब्लिकेशन्स विभाग ने की। इस सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के वेद पाठों का उच्चारण किया गया इसी के साथ भजन, कव्वाली एवं चंद्रशेखर आजाद के जीवन चरित्र पर आधारित एक नाटक को प्रस्तुत किया गया।

यज्ञवेदी पर कुछ विशेष परिवारों को सम्मानित किया गया जिसमें नीलम-अरुण थापर एवं सरला-रमेश ठक्कर को सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर श्रीमती अरूणा सतीजा के पुत्र श्री राजेश सतीजा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। तदोपरान्त दिल्ली से आर्य समाज के युवा विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार का यज्ञ पर प्रवचन इस दिन का मुख्य आकर्षण था।

युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम:- पिछले 5 वर्षो से ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों के लिये टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंत्र, व्यायाम प्रदर्शन इत्यादि का कार्यक्रम दो सप्ताह पूर्व से चलता है जिसमें विजयी टीमों को इस सत्र में पारितोषिक दिये जाते हैं। इस अवसर पर ही पारितोषिक के रूप में शील्ड, ट्राफी, स्मृतिचिन्ह तथा नकद राशि के साथ प्रमाणपत्र भी दिये गए। इस सत्र के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार, ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट थे।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत- इस रात्रि सत्र में श्रीमती अरूणा सतीजा

ने वेदों में नारी के स्थान पर अपना ओजपूर्ण भाषण दिया। इसके उपरान्त मुख्य मंच से बोधोत्सव पर पधारे सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों का स्वागत शॉल एवं मान राशि देकर किया गया। तदोपरांत उत्तर प्रदेश बिजनौर से पधारे संगीताचार्य श्री कुलदीप आर्य एवं पत्नी श्रीमती कविता आर्य द्वारा भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

मुख्य श्रद्धांजलि सभा- श्री मिठाईलाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई और इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेश मुंजाल जी उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति विशेष सम्मान के रूप में श्रीमती किरणा अमित पटेल (भुज) को टंकारा श्री, श्री अमृतलाल मेघजी भाई बुद्धदेव (टंकारा) एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल (दिल्ली) को टंकारा रत्न और श्री अशोक दड़गा को टंकारा मित्र की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानंद स्मृति सम्मान स्वामी श्रद्धानंद जी (महाराष्ट्र) को दिया गया। इस अवसर पर श्री एस. के. शर्मा जी ने श्री पूनम सूरी जी का संदेश पढ़कर सुनाया।

जन्मे हुए मरते, मरे निश्चय जनम लेते कहीं। ऐसी अटल जो बात है उसकी उचित चिन्ता नहीं।

शिवरात्रि के दिन का अंतिम सत्र रात्रि 8 से 11 बजे तक श्रीमती शिवराजवती आर्य, वरिष्ठ ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आये हुउ ऋषिभक्तों ने अपनी कवितायें, भजन और शब्दों द्वारा संक्षिप्त रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की तदोपरांत डॉ. धर्मेन्द्र विद्यार्थी द्वारा प्रवचन हुआ। लगभग डेढ़ घंटे तक बिजनौर उत्तर प्रदेश से पधारे श्री कुलदीप आर्य एवं पत्नी श्रीमती संगीता आर्य द्वारा संयुक्त रूप से भजनों के माध्यम से ऋषि के प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित की गई। - रामनाथ सहगल, मंत्री

महर्षि दयानंद गुरुगुल आश्रम शिक्षण संस्थान, भासीणा के तत्वाधान में यज्ञ, सत्संग एवं अन्न वितरण कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ़ (जिला चुरू) के तत्वावधान में विगत 32 वर्षो से अनेक लोक कल्याणकारी योजनाऐं ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी आर्यजगत के सेवावीर भामाशाह महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण जी आर्य (कुलपति, गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा) की प्रेरणा से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई है।

जन कल्याणकारी योजनाओं में पोलियोग्रस्त लोगों के ऑपरेशन कराना, मोतियाबिंद के ऑपरेशन कराना, बवासीर के उपचार कराना। निर्धन, विधवा, विकलांग लोगों को विविध प्रकार से पेंशन तथा अन्न, वस्त्र, रजाईयां, कम्बल, जूते, तिपहियां पानी के ऑवरहेड टेंक, विश्रामघर, संस्थानों के द्वार, भवन आदि बनवाये गये। साथ ही उनके लिए चारे-तूड़े, गुड़-खल, ज्वार आदि की व्यवस्था की गई। निर्धन बेघर लोगों के लिए 400 मकान बनवाये। अनेक यज्ञशलाऐं, पर्यावरण शुद्धि हेतु हजारों वृक्षारोपण तथा वृक्षों के गट्टे बनवाये गये। इस प्रकार परोपकार के उपक्रमों की अनेकानेक योजनाओं द्वारा निर्धन, असहाय, विकलांग, विधवा आदि लाखों लोगों को लाभांवित किया गया।

इसी परम्परा में महर्षि दयानन्द गुरुकुल आश्रम शिक्षण संस्थान भासीणा तहसील सुजानगढ़ (जिसके संस्थापक स्वनामधन्य दानवीर वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य है) के तत्वावधान में एवं परम पूज्य स्वामी सुमेधानंद जी सरस्वती, पिपराली (सीकर) तथा श्री पुसाराम जी गोदारा (पूर्व प्रधान, पंचायत समिति सुजानगढ़ एवं जिला परिषद् सदस्य चुरू) के सान्निध्य में असहाय, निर्धन एवं विकलांग लोगों को 50-50 किलो बाजारी कीमत लगभग 800 रू. का वितरण करने के साथ-साथ वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, सत्संग का कार्यक्रम भी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिससे पेट की भूख मिटने के साथ-साथ आत्मा की भूख भी मिट सके। यह अन्न वितरण का कार्यक्रम गुरुकुल शिक्षण संस्थान का लगभग 5 लाख से अधिक का है। यह राशि जन सहयोग से प्राप्त की गई है।

अन्न-वस्त्र वितरण एवं यज्ञ, सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न:- गुरुकुल हरिपुर जुनवानी जिला नुआपड़ा (ओड़िशा) ने विगत ढाई वर्षों से राज्य एवं राज्य के बाहर अनेक सेवा प्रकल्पों, ब्रह्मचारी निर्माण, दीन-दुःखियों, अनाथों की सेवा के साथ-साथ धार्मिक कार्यो को करते हुए आर्यजगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। सेवा परिपेक्ष्य में ओड़िशा, छत्तीसगढ़, आसाम और आंध्रप्रदेश के उपरान्त पुन: ओड़िशा के सर्वाधिक निर्धन जिला फुलवाणी (कंधमाल) नुआगां, राईकिया एवं फिरीगीया विकासखंड के विभिन्न 26 गावों के 600 जरूरत मंद लोगों को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान एवं जन सहयोग से आर्यजगत् के सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण आर्य कोलकाता की प्रेरणा से गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के निर्देशन में गुरुकुलीय आचार्य देय श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु एवं श्री धर्मराज पुरुषार्थी की देख-रेख में तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से अन्न-वस्त्र वितरण एवं यज्ञीय कार्यक्रम माघ शुक्ल एकादशी, द्वादशी तदनुसार 21-22 फरवरी 2013 दिन गुरुवार, शुक्रवार को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति परिवार को 25-25 किलो चावल जिसका मूल्य 20/- प्रति किलो एवं एक-एक साड़ी जिसका मूल्य 200/- प्रति साड़ी के दर से एक परिवार को 700/- का सहयोग प्रदान करने के लिये साढ़े चार लाख रूपये का प्रबंध किया गया था। स्थानीय क्षेत्र के असहाय और पिछड़े लोगों को सहायता प्रदान करने के साथ-साथ वितरण केन्द्रों में वैदिक यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ जिससे पेट की भूख मिटने के साथ-साथ आत्मा की भी भूख मिट सके। इस अवसर पर गुरुकुल हरिपुर की ओर से सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य के शुभकरकमलों से 30 स्थानीय कार्यकर्ताओं को शॉल एवं आर्य सिद्धांत विमर्श पुस्तिका प्रदान कर स्वागत किया। - शिक्षक संस्थान के ट्रस्टी

यज्ञ एवं वेद प्रचार का मासिक कार्यक्रम

आर्य समाज वेद प्रचार समिति, अलवर द्वारा कर्मचारी कॉलोनी रामेश्वरम् मंदिर, अलवर में यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य शिरोमणी विनोदीलाल जी दीक्षित द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। उसके पश्चात श्री अमर मुनि मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ नित्य कर्म है जैसे भोजन करना पानी पीना, सोना-जागना, नहाना-धोना आदि नित्य कर्म है इसी प्रकार यज्ञ भी हमारा नित्य कर्म है। यज्ञ के द्वारा हम अपना शरीर-मन व आत्मा की शुद्धि करते है। हमारे ऋषि मुनियों ने पर्यावरण को शुद्ध रखने का यह सर्वश्रेष्ठ साधन बताया है। जबसे हमारे देश में यज्ञ संस्कृतिक का अभाव हो गया तभी से मानव असुरक्षित होता चला जा रहा है। इसलिए प्रत्येक परिवार में नित्य यज्ञ होना अनिवार्य है।

अस अवसर पर रघुवीर आर्य व धर्मवीर ब्रह्मचारी, रमेश चुग, सपत्नी सुनीता आर्य, सत्यपाल आर्य, ओम प्रकाश तनेजा, श्रीमती रामप्यारी तनेजा, कृष्ण कुमार भाटिया (राजगढ़), सरोज भाटिया, ईश्वरी देवी एवं कॉलोनी के चार परिवार यज्ञमान बने। अनेको बंधुओं ने यज्ञ एवं सत्संग में भाग लिया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त किया गया। -सुनील उपमंत्री

अव्यक्त प्राणी आदि में हैं मध्य में दिखते सभी। फिर अन्त में अव्यक्त, क्या इसकी उचित चिन्ता कभी।।

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाज एवं जन सहयोग से

पर्यावरण शुद्धि एवं विश्वशान्ति हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले की समस्त आर्य समाजों एवं जन सहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्वशांति हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ आज 21 अप्रैल 2013, रविवार को वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित किया गया।

यज्ञ स्थल पर आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने यज्ञ के ब्रह्मा प्रडित हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, नई दिल्ली एवं श्री अमरमुनिजी, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का तिलक लगाकर एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया। 51 कुण्डीय महायज्ञ प्रातः 7:30 बजे आर्य कन्या महाविद्यालय प्रांगण में प्रारंभ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. हरि प्रसाद व्याकरणाचार्यजी ने सस्वर वैदिक मंत्रों का उच्चारण एवं व्याख्या करते हुए बताया कि वेदों के ज्ञान से हम अपने आचरण को बदल सकते हैं तथा परमपिता ही हमें सद्बुद्धि देते हैं। यज्ञ का संचालन श्री अमरमुनि ने किया।

श्रद्धालुओं के उत्साह को देखते हुए आयोजन समिति द्वारा अतिरिक्त यज्ञवेदियों की व्यवस्था की गई। श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक यज्ञ किया। समस्त आगन्तुक अतिथियों ने हवन वेदियों में पूर्णाहुति दी। यज्ञ में सम्मिलित समस्त यजमानों को आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति द्वारा सत्यार्थ प्रकाश भेंट की गई।

यज्ञोपरान्त विद्यालय हॉल (दयानन्द भवन) में आर्य विद्वानों के भजन एवं प्रवचन कार्यक्रम हुआ। स्वामी प्रणवानन्दजी, गुरूकुल गौतम नगर; स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती, वैदिक आश्रम पिपराली, सत्यव्रत सामवेदीजी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एवं आचार्य देवव्रतजी, संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को आर्य कन्या विद्यालय समिति प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता, उपप्रधान अशोक आर्य, मंत्री प्रदीप आर्य, संयोजिका एवं निदेशक कमला शर्मा, डॉ राजेन्द्र आर्य एवं डॉ. एस.सी. मित्तल ने 51 किलो की माला पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम ईश वन्दना से प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात ब्रह्मचारी द्वारा भजन गाया गया।

दिविशा आर्य ने 'उगता हुआ सूरज दुआएँ दें आपको खिलता हुआ गुलाब खुशबू दे आपको' कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्य देवव्रतजी के अनुसार यज्ञ का मुख्य रूप परमात्मा है तथा मनुष्य का शरीर यज्ञ मय है, यज्ञ सब प्रकार के एश्वर्य की वृद्धि करता है। यज्ञ पर्यावरण को शुद्ध करता है।

स्वामी सुमेधानन्दजी ने बताया कि समस्त संसार भौतिकता की तरफ बढ़ रहा है। यज्ञ करने से ही अन्न एवं जल मिलेगा, वेद मंत्रों से मन को शांति मिलती है। विश्वशान्ति के लिए यज्ञ को स्थापित करना होगा।

स्वामी प्रणवानन्दजी ने कहा कि हमें जीवन में परोपकारी बनना चाहिए। मनुष्य को हर वस्तु का बॉटकर उपयोग करना चाहिए। मनुष्य जो देगा उसका दस गुणा पाएगा। यज्ञ से मानवता आती है तथा यज्ञ से ही पर्यावरण की शुद्धि होती है। यज्ञ में जो आहुति देते हैं वह ही हमें शुद्ध वातावरण के रूप में प्राप्त होता है। सत्यव्रत सामवेदीजी ने विश्वशांति का संदेश देते हुए ओ3म् के महत्व पर प्रकाश डाला। अमरमुनिजी ने मंच संचालन किया।

अंत में प्रधानजी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथिगण एवं सभासदों का आभार प्रकट किया। आज के यज्ञ को पर्यावरण शुद्धि व विश्वशांति को समर्पित किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान श्री जगदीश आर्य मंत्री श्री हरिपाल शास्त्री श्री सत्यपाल आर्य, सुरेश दर्गन, प्रद्युम्न गर्ग, कै. रघुनाथ सिंह, वेद प्रकाश शर्मा, शैलेन्द्र भार्गव, रामनारायण सैनी, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, सुरेन्द्र सक्सेना, डॉ. हरीश गुप्ता, हरीश अरोड़ा, जगदीश प्रसाद शर्मा, ओमप्रकाश तनेजा, सुभाष आर्य, अशोक शर्मा, गोपाल शर्मा, विनोदीलाल दीक्षित, ललीत, बलवीर सिंह 'करूण', चैन नारायण माथुर, अतुल्य माथुर, कृष्णलाल अदलक्खा, धर्मवीर आर्य, रमेश चुग, सुनील आर्य, बृजेन्द्र देव आर्य, शिकुमार कौशिक, गजेन्द्र शास्त्री, च्यवन भार्गव, रविन्द्र सचदेवा, संभव शर्मा, मोहिनी गुप्ता, माता मोहन देवी, शांति आर्य, शशी भार्गव, बनारसी देवी, संजू गर्ग, सरला आर्य, विभा आर्य, सुमन आर्य, इन्द्रा आर्य, मीता गुप्ता, अलका मित्तल, शांति तनेजा, सविता थरेजा, अनामिका शर्मा, कमल आर्य, कमलेश सैनी–सभापति नगर परिषद, अध्यापकगण, छात्राएँ एवं शहर के हजारों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

–कमला शर्मा, निदेशक एवं संयोजिका 51 कुण्डीय महायज्ञ

आर्य समाज बड़ा बाजार के 106वें वार्षिकोत्सव पर

आध्यात्मिक दिव्य सत्संग

दिनांक 29 अप्रैल सोमवार से 5 मई रविवार 2013 तक

आर्य समाज बड़ा बाजार नं. 1, मुंशी सदरूदीन लेन, कोलकाता ने अपने 106वें वार्षिक महोत्सव 29 अप्रैल से 5 मई 2013 के अवसर पर दिनांक 4 मई 2013 शनिवार को महाजती सदन, 166 चितरंजन एवेन्यु कोलकता में शाम का 6 बजे वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण आर्य (लाहोटी) प्रख्यात समाज सेवी कोलकता (सुजानगढ़) का सार्वजनिक अभिनन्दन होने जा रहा है। इस अवसर पर श्री आचार्य राजसिंह जी आर्य नई दिल्ली के उपदेश एवं भक्ति संगीत श्री पं. कुलदीप विद्यार्थीद्वारा भजन प्रस्तुत किये जायेंगे।

–सत्यनारायण

फिर देखकर निज धर्म, हिम्मत हारना अपकर्म है। इस धर्म–रण से बढ़ न क्षत्रिय का कहीं कुछ धर्म है।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, जयपुर द्वारा

श्रीरामनवमी महोत्सव में किया क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

जयपुर ! 20 अप्रैल ! आर्य समाज के युवा संगठन **सार्वदेशिक आर्य वीर दल** की जयपुर शाखा द्वारा ब्रह्मपुरी क्षेत्र स्थित डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल में मानव जीवन की आस्था के आधार भगवान श्रीराम के जन्मदिवस **"श्रीरामनवमी"** के उपलक्ष्य में कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों के लिए **क्विज प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया ।

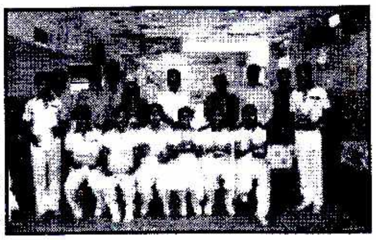

प्रातः 8.30 से 11.00 बजे तक चली इस प्रतियोगिता में चार–चार विद्यार्थियों के दो वर्ग बनाये गये जिनका नाम भी रामायणकालीन नगरों के नाम के अनुसार ही **"अयोध्या वर्ग"** एवं **"किष्किन्धा वर्ग"** रखा गया । प्रतियोगिता में प्रतिभागी विद्यार्थियों से मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन पर आधारित प्रश्न पूछे गये , जिनमें से कई का उन्होंने बहुत सुन्दर उत्तर दिया, तो कई प्रश्नों पर वे कन्फ़्यूज हो गये और कुछ प्रश्नों में एक–दूसरे की तरफ देखते नजर आये। **"ईशवः"**, **"वारूणास्त्र"**, **"ब्रह्मास्त्र"** व **"निःशस्त्र योद्धा"** इन चार चरणों में आयोजित प्रतियोगिता में दोनों ही टीमों के बीच चले संघर्ष पूर्ण मुकाबले में 165 अंक प्राप्त कर **"किष्किन्धा वर्ग"** ने 55 अंक से इस प्रतियोगिता में विजय प्राप्त की ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य निर्णायक की भूमिका में बोलते हुए प्रसिद्ध समाज सेवी **श्री यशपाल यश** ने कहा कि यदि वर्तमान विद्यार्थी भगवान राम के गुणों को अपने जीवन में उतारते हुए आगे चले तो उनकी भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है ।

तत्पश्चात् विजेताओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व अन्य साहित्य पुरस्कार स्वरूप भेंट किया गया। अन्त में विद्यालय की वाईस प्रिंसीपल **श्रीमती शशि माथुर** ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संगठन के **महामंत्री श्री अनिल आर्य** ने किया।

–प्रमोद आर्य, प्रवक्ता

पनपता अंधविश्वास

कभी धर्म के नाम पर मूक पशुओं की बलि देने का बड़ा हिंसक कृत्य होता रहा तो कभी अंधविश्वास के नाम पर पता नहीं कैसे–कैसे घोर अनर्थ भरी घटनाएं खुले आम होती रही। विडम्बना यह है कि 21वीं सदी की तरफ बढ़ते भारत में अभी भी अंधविश्वास की जड़े फैल रही है। कुछ तत्व उन्हें जान बूझकर पोषित कर रहे हैं। अभी हाल ही नवीनतम मामला कोलकत्ता का सामने आया है। जहां अबोध नन्हें–नन्हे बच्चों को सड़क पर लिटाकर कथित पुरोहित उनके ऊपर से होकर गुजरते है। इन लोगों की यह मान्यता बताई कि ऐसा करने से उनकी मनोकामना पूर्ण होती है। इसे भगवान शिव की आराधना का स्वरूप बताया गया है। शिव को खुश करने और उनका आशीर्वाद लेने का यह तरीका वर्षों से प्रचलित है और वह अभी भी खुले आम हो रहा है।

पैरों में बच्चों को पटकना और उन पर होकर गुजरना कोई धर्म–कर्म नहीं बल्कि यह ढोंग है। यह तो सरासर अन्याय और अपराध है। दुःखद यह है कि ऐसे अंधविश्वास अभी भी पनप रहे है जो तुरन्त बंद होने चाहिए। बच्चे तो यूं भी परमात्मा के स्वरूप होते हैं। उनकी नाजुक व कोमल काया पर भारी भरकम आदमी के द्वारा पैर रखकर गुजरना अमानवीय कृत्य है। यह तो जीव आत्माओं का खुला अपमान है। इससे कभी किसी का कोई भला नहीं बल्कि भयंकर अनिष्ठ ही होगा। उन्हें पैरों में डालना और उस पर होकर गुजरना, मूर्खता ही नहीं हैवानियत भरी पराकाष्ठा है। इससे कोई मनोवांछित कामना पूर्ण नहीं होती।

अंधविश्वास युक्त व महत्वपूर्ण सवाल यह है कि ऐसी मूर्खता भरी कथित मान्यताएं 21वीं सदी में भी पनप रही है। जो तुरन्त प्रभाव से बंद होनी चाहिए। पिछले दिनों राजस्थान में भगवान की खुशियां पाने के लिए एक परिवार के पांच सदस्य एक साथ जहर के लड्डू खाकर मौत की नींद सो गए वहीं दिल्ली के पास एक कथित देवता को खुश करने के लिए सैकड़ों बोतल शराब अर्पित की जाती है। ऐसे अनेक घिनोने कर्म–कांड धर्म के नाम पर, भगवान को खुश करने या खुद सुखी बनने के नाम पर किए जा रहे हैं जबकि वास्तविक तथ्य यह है कि ये सिर्फ अंधविश्वास व पाखंड के अलावा इनमें कुछ नहीं है। वक्त की जरूरत है कि इस तरह के पनपते अंधविश्वासों का मुखर होकर विरोध किया जाए ताकि भविष्य में किसी के भी बच्चें पैरों में न रोंदे जाये। साथ ही किसी भी तरह का पाखंड पोषित न हो पाए। इनसे वाकई धर्म के शाश्वत मूल्य पवित्र व पावन रहने में मदद मिलेगी। धर्म बदनाम व कलंकित नहीं हो सकेगा।

-ओम प्रकाश गुप्ता, संपादक राजस्थान टाईम्स

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, ए... ...र जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।